खुद की इमेज बनाने में जिंदगी गुजर जाती है।
– अज्ञात

नई शिक्षा नीति को मंजूरी

इस बीच देश, दुनिया और समाज का पूरा ताना–बाना बदल गया, उद्योगों की संरचना बदल गई, जीवन व्यवहार बदल गया, सबकी जरूरतें बदल गईं। जाहिर है इन तमाम बदलावों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में भी सुधार की जरूरत थी।

नवीन चंद्रा।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आखिरकार नई शिक्षा नीति को मंजूरी देकर शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन की प्रक्रिया शुरु कर दी। अभी देश में 34 साल पहले बनी शिक्षा नीति लागू थी। इस बीच देश, दुनिया और समाज का पूरा ताना–बाना बदल गया, उद्योगों की संरचना बदल गई, जीवन व्यवहार बदल गया, सबकी जरूरतें बदल गईं। जाहिर है इन तमाम बदलावों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में भी सुधार की जरूरत थी।

नई नीति में जितने व्यापक स्तर पर बदलाव की घोषणा की गई है, उसे देखते हुए कम से कम एक बात विश्वासपूर्वक कही जा सकती है कि सरकार ने बदलावों को लेकर किसी भी तरह की हिचक नहीं दिखाई है। चाहे शिक्षा व्यवस्था का दायरा बढ़ाते हुए उसमें तीन साल के प्री–स्कूलिंग पीरियड को शामिल करने की बात हो, या कम से कम पांचवीं तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय अथवा क्षेत्रीय भाषा को बनाने की, ऐसे तमाम बड़े–बड़े फैसले इसमें शामिल हैं जिन पर समाज में तीखी बहस होती रही है।

मातृभाषा में शिक्षा को ही लिया जाए, तो ऐसा कहने वालों की कमी नहीं है कि अंग्रेजी का ज्ञान 21वीं सदी के भारत की सबसे बड़ी ताकत रहा है। अपनी इसी क्षमता के बूते भारतीयों ने आईटी के क्षेत्र में दुनिया भर में अपने झंडे गाड़े, लेकिन विशेषज्ञ काफी पहले से कहते रहे हैं कि शुरुआती उम्र में मातृभाषा में पढ़ाई बच्चों के सहज व तेज मानसिक विकास में सहायक होती है।

दूसरी बात यह कि अंग्रेजी मीडियम स्कूलों का जो क्रेज इस बीच बना है, उसने बच्चों के बीच खाई चौड़ी कर समाज को कई स्तरों पर नुकसान पहुंचाया है।

मातृभाषा में शुरुआती पढ़ाई का प्रचलन इस खाई को थोड़ा–बहुत भी पाटता है तो सबके लिए अच्छा होगा। इसी तरह कॉलेज स्तर पर भी अंडरग्रैजुएट कोर्स को तीन या चार साल का और एमए को एक साल का करने से लेकर मल्टिपल एग्जिट की व्यवस्था करने तक ऐसे अनेक कदम उठाए गए हैं जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए बाकी दुनिया से तालमेल बनाते हुए चलना आसान बनाएंगे। हां, इसमें कुछ ऐसी घोषणाएं भी कर दी गई हैं जो पहली नजर में रस्मी लगती हैं और जिनके अमल में आने को लेकर संदेह स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए इसमें शिक्षा पर जीडीपी का छह फीसदी खर्च करने की बात है जो आजादी के बाद से ही दोहराई जाती रही है।

इस सपने को उच्च शिक्षा में प्राइवेट सेक्टर के सहयोग से ही पूरा किया जा सकता है। लिहाजा सरकार को इस नीति में उन मांगों को जोड़ना चाहिए जो उच्च शिक्षा संस्थान काफी समय से कर रहे हैं। बहरहाल, व्यापक बदलाव की उम्मीद जगाती नई शिक्षा नीति अमल की कसौटियों पर कितना खरा उतरती है, यह देखने के लिए थोड़ा इंतजार तो करना ही होगा।

अपना ध्यान

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। एक समय बाद यह आदत बन जाती है.... जिसके परिणामस्वरूप हम दूसरों के जीवन में अपना हस्तक्षेप बढ़ा देते हैं। बहुत से लोगों का अहम इससे शांत होता है... उन्हें लगता है... क्योंकि सुझाव देने से आप स्वयं को उनसे बड़ा आंक लेते हैं... और आपको यह लगने लगता है कि किसी ना किसी रूप में आपको उनके जीवन का नियंत्रण प्राप्त हो गया है।

आपको अपना ध्यान परम सत्य या सर्वोच्च सत्य पर रखना चाहिए ... क्योंकि इस भौतिक दुनिया के सत्य हमेशा बदलते हैं.. उसके कई संस्करण या रुपांतर भी होते हैं। लेकिन वह सर्वोच्च सत्य एक ही है.. जिसे कभी बदला नहीं जा सकता। क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। मनुष्य के अन्तरूकरण में उठने वाली उग्रवृत्ति इतनी घातक है कि उसके जागने से व्यक्ति का रूप बड़ा कुरुप हो जाता है।

संपादकीय

धर्म में जगह

मंदिर आंदोलन से जो राम निकलकर आए हैं, कभी–कभी लगता है कि वे अपनी ही कथाओं को झुठलाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि ये वाले राम पूरी तरह राजनीतिक हैं। राम के दस हजार से अधिक मंदिर अयोध्या में पहले से ही हैं, अब एक और बनने जा रहा है। सरकार का मानना है कि इससे न केवल यहां के सभी मंदिरों की बल्कि अयोध्यावासियों की भी आमदनी बढ़ेगी। ऐसा हो तो बहुत अच्छा, लेकिन पिछले तीन दशकों में राम का नाम लेकर जो ढेरों योजनाएं अयोध्या के लिए घोषित की गईं, वे कहां गईं, कोई नहीं जानता। ग्रामीण अवध में कोई राम को देखना चाहता है तो अपने गीतों में बसी कहानियों के जरिये देखता है। पहलौठी लड़का होता है तो उसमें राम का रूप देखा जाता है– 'रानी कवन–कवन फल खायू, राम बड़ सुन्नर हो।' शादी किसी की हो, वर राम ही होते हैं– 'मउरा संवारैं राम अवधपुरी मा, चंदन संवारैं सिया के अंगना।' किसी का मन करता है तो वह राम वनवास दो साल पहले ही खत्म कर देता है, 'बरह बरिस पै राम अइलैं, अंगनवा ठाढ़ भइलैं न हों।' बेटा परदेस गया है और बहू घर में रूठी बैठी है तो अवध के गांव में आज भी मां का मन कुछ इस तरह मसोसता है– 'मचिया ई बैठेली कौसिल्ला रानी, मने–मने झंखेली हो जीउ केहू मोरे सीता के मनइहैं त राम ले बोलइहैं न हो।' कोई मेरी सीता को मना लेता और राम को बुला लाता। अवध में राम से अधिक सीता का सम्मान है। सीता अवध का दुख हैं, सो जिक्र हर जगह पहले उनका ही होता है। सबसे बड़ी बात यह कि किसी के भी पास इसका कोई उत्तर नहीं है कि सनातन धर्म में राम की कोई अपरिहार्यता तो है नहीं, फिर समूचे हिंदू धर्म के लिए गया–गंगासागर, कुंभ, चार धाम और काशी जितनी अपरिहार्य अयोध्या कैसे बन जाएगी? दरअसल, इस सवाल में ही कलियुग के राम के साथ–साथ अयोध्या का भविष्य भी छुपा है।

कह सकते हैं कि 30–35 वर्षों में राम बहुत बदल गए हैं और अकेले भी हो चुके हैं। अयोध्या में बिना सीता जी के राम कहीं नहीं दिखते, लेकिन नए राम के साथ सीता जी नहीं हैं।

नया हिंदू तीर्थ

राहुल पाण्डेय

बाबरी मस्जिद विध्वंस के 28 साल बाद अयोध्या में बुधवार को धूमधाम से राम जन्मभूमि मंदिर का शिलान्यास हो गया। सन 1989 में सांकेतिक रूप में रखे गए नींव के पहले पत्थर के साथ हिंदुओं में जिस राम चेतना का संचार हुआ, उसे मंदिर आंदोलन ने एक ठोस राजनीतिक आकार दिया। इस चेतना को संवाद–विमुख बनाने की शुरुआत सन 2002 में गुजरात से हुई, जिसका अक्स अयोध्या में चौक–चौराहों पर बिकती और कुछेक घरों पर फहराती धर्म पताकाओं में छपे क्रुद्ध राम और हनुमान की तस्वीरों में भी दिखता है। कह सकते हैं कि 30–35 वर्षों में राम बहुत बदल गए हैं और अकेले भी हो चुके हैं। अयोध्या में बिना सीता जी के राम कहीं नहीं दिखते, लेकिन नए राम के साथ सीता जी नहीं हैं।

दुनिया के चार प्रमुख धर्मों– ईसाइयत, इस्लाम, हिंदू और बौद्ध– का पिछले एक हजार सालों का इतिहास देखें तो आखिरी केंद्रीय धार्मिक निर्माण कार्य इस्लाम के ही खाते में दर्ज है। हमें 624 ईसवी का साल मिलता है, जब मुसलमानों ने काबे की ओर मुंह करके पांच वक्त की नमाज पढ़नी शुरू की। 629–630 में जब मोहम्मद साहब मक्का वापस आए, तब इसकी महत्ता और भी बढ़ी और वक्त के साथ–साथ इसमें

मरम्मत होती गई, जिसे आज हम एक वर्गाकार इमारती ढांचे के रूप में देखते हैं। ईसाइयों में सबसे पुराना तीर्थ येरुशलम है, फिर रोमन राजाओं के वक्त रोम में कुछ धार्मिक इमारतें बनीं और उसके बाद इंग्लैंड का कैंटरबरी बाकायदा चर्चों का शहर बना। दुनिया के एकमात्र धर्मराज्य वैटिकन का स्वतंत्र अस्तित्व 20वीं सदी की चीज है जिसे सन 1929 में इटली से अलग करके बनाया गया।

इसके बाद भी दुनिया में धार्मिक निर्माण कार्य जारी तो रहे, लेकिन ऐसा कोई धार्मिक स्थल नहीं बना, जिसे उस धर्म की अस्मिता से जोड़ा गया हो। कह सकते हैं कि इतिहास में आज हम उस जगह खड़े हैं, जहां काफी अरसे बाद वृहद हिंदू अस्मिता से जुड़ा कोई निर्माण कार्य होने जा रहा है। राम हिंदुओं की वृहद धार्मिक अस्मिता से जुड़े हैं, जो इन्हीं 30–35 सालों में न सिर्फ शैव और शाक्त बल्कि कृष्णभक्ति से ओतप्रोत वैष्णव परंपरा को भी पीछे छोड़ती हुई हिंदू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में उभर रही है। शैवों, शाक्तों और वैष्णवों के बीच मौजूद टकराव पिछले सौ वर्षों में तिरोहित होते गए हैं और दक्षिण भारत के शैवों से लेकर बंगाल और पहाड़ के शाक्तों तक में रामकथा को लेकर बराबर सम्मान दिखता है। लेकिन जो राम इस धार्मिक समरसता के केंद्र में हैं, उनके स्वरूप में उस क्रोध का स्थान कहां है, जो अभी उनकी तस्वीरों में दिखाई देने लगा है?

वे तो वनवासी राम हैं। केवट को उतराई न दे पाने के कारण सकुचाए हुए राम। थके, भूखे, शबरी के जूठे बेर खाने वाले राम। आज भी इलाहाबाद में कुंभ लगता है तो अवध की ग्रामीण महिलाएं गाती हैं– 'अवधा लागे उदास, हम न अवध में रहबैः रघुबर संगे जाब, हम न अवध में रहबै।' अवध उदास है, राम वहां नहीं हैं। सीता और लक्ष्मण के साथ वन–वन भटकते हुए वे बारिश में भीग रहे होंगे– गाते–गाते अवध की स्त्रियां भीग जाती हैं। मेरी दादी गाती थीं– 'राम बेईमान अकेले छोड़ गइलें', और कोठरी में बंद होकर रोती थीं। वे एक बार भी राम जन्मभूमि का दर्शन करने नहीं गईं। जिसके हृदय में राम हों, वह दर्शन की लाइन में क्यों लगे? अवध में राम लोगों के मन में हैं। यहां हर कोई राम को डांटता–डपटता है, प्रेम करता है, उलाहने देता है और अक्सर झगड़ा किए बैठा रहता है।

अष्टयोग- 5135

3	1					
	31		37		28	
4		5			1	2
	29		40	7	34	3
1	6			3		
	32		26	5	34	1
	5		3		2	7

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5134 का हल

1	2	3	4	5	6	7
7	24	2	32	3	41	6
2	3	4	5	6	7	1
6	28	1	36	2	30	4
3	4	5	6	7	1	2
5	39	7	43	4	25	5
4	5	6	7	1	2	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

औरतों ने अपना रोजगार खो दिया

मोहन। कोरोना की शुरुआत से ही लोगों के रोजगार पर बन आई है। बेरोजगार होने वालों में महिलाओं की संख्या बहुत ज्यादा है। विमन पॉलिसी रिसर्च ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि इस दौरान दुनिया भर में साठ प्रतिशत औरतों ने अपना रोजगार खो दिया। वहीं एक अन्य सर्वे में बताया गया था कि भारत में पुरुषों से पहले औरतों की नौकरियां जा रही हैं। 2005 से 2018 तक भारत में औरतों की रोजगार में भागीदारी 32 फीसद थी, जो अब महज 21 फीसद रह गई है। औरतों के लिए नौकरियां पहले ही कम थीं, यह महामारी उन्हें और ले डूबी। अपने देश में जैसे–जैसे मध्यवर्ग की औरतें पढ़–लिखकर काम करने निकलीं, उन्हें अपना घर–परिवार चलाने के लिए सहायकों की जरूरत महसूस हुई। इसीलिए सुबह–सवेरे बहुत सी घरेलू सहायिकाएं इन दोहरी आय वाले घरों की तरफ आती दिखती थीं, जहां पति–पत्नी के दफ्तर निकलने से पहले उन्हें घर के सभी काम–काज निपटाने होते थे।